रात्रि क्लास 9-10-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

यह राजयोग बाप सिखलाते हैं। यह है ही ल0ना0 बनने का। सभी कहते हैं हम भविष्य में ल0 वा ना0 बनने आये हैं। यह है सत्य नर से ना0 बनने का ज्ञान। जिसको वह कथा कहते हैं। बीती हुई बात का वर्णन करते हैं। यह राजयोग बाप ने ही सिखाया था जिससे ल0ना0 बने थे। बाप ने समझाया है ल0 और ना0 इन्होंने ही पूरे 84 जन्म लिये हैं। यह ड्रामा है। इस ड्रामा में तुम बच्चों ने अनेक वार पार्ट बजाया है। अनेक वार पढ़े हो। हर कल्प पुरुषोत्तम संगम युग पर जिस प्रकार बाप ने कल्प2 पढ़ाया है राजयोग सिखाया है वैसे ही सिखलाते हैं। जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता। अभी पुरुषार्थ कर रहे हैं। जो पुरुषार्थ कल्प2 जिस जिस ने किया है ऐसे ही करते हैं। कोई बहुत कोई कम करते। बाप व दादा साक्षी को देखते हैं खेल को। बच्चे पुरुषार्थ करते रहते हैं। पुरुषार्थ कराने वाली भी ड्रामा है। कहेंगे ड्रामा के प्लेन अनुसार इनका पुरुषार्थ उत्तम है। इनका पुरुषार्थ मध्यम है। कल्प पहले भी ऐसा पुरुषार्थ था। अगर कनिष्ठ पुरुषार्थ है तो भी कहेंगे कल्प कल्प ऐसा होगा। फर्स्ट सेकण्ड थर्ड होते हैं। जिसने जैसा पुरुषार्थ किया है वह सा0 होता रहेगा। फीलिंग आती है कल्प कल्प इसने किस प्रकार पुरुषार्थ किया है। दिखाई पड़ता है। स्क्युरेट वही पार्ट बजाते हैं। ड्रामा में जरा भी फर्क नहीं नहीं हो सकता। कहेंगे इनका पुरुषार्थ बिल्कुल ही ठंढा है। मालूम पड़ता रहता है यह अच्छा पढ़ाते हैं। यह सीखने जाते हैं। यह थोड़ा सीखे हैं। पुरुषार्थ करते रहते हैं। बाप समझाते हैं मुख्य बात है परिचय देना। आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। शरीर जवान बूढ़ा होता है। आत्मा छोटी बड़ी नहीं होती। आत्मा सतोप्रधान तमोप्रधान होती है। छोटी वा बड़ी नहीं होती। इनकी आत्मा परमात्मा से अच्छा पढ़ती हैं। इनकी आत्मा मध्यम पढ़ती हैं। तो ऐसा पद मिलता है। नम्बर का बहुत फर्क रहता है। समझा जाता है यह अच्छा समझते समझाते हैं तो जरूर उत्तम पद भी पावेंगे। यह मेरे से होशियार है।। साक्षी हो देखे को पुरुषार्थ को अच्छी फील करते हैं तो कहेंगे हम इन से ऊंच पद पा सकते हैं। उन से ऊंच जा सकते हैं। पुरुषार्थ हरेक वह करते हैं वो कल्प पहले किया है। अभी बहुत समय पड़ा है। कोई ठंढा करते हैं तो गेलपकराया जाता है। पुरुषार्थ से ही प्रारब्ध मिलती है। ल0ना0 आगे जन्म में कौन थे? (ब्रह्मा सरस्वती) राईट है। ममा तीखी थी। समझा जाता है ममा जैसी तीखी और कोई नहीं। यह दादा भी सबसे तीखा है। तो जरूर यही नम्बरवन बनेंगे। बच्चों में भी कहेंगे सबसे कुमारका तीखी दिखाई पड़ती है। मेल्स में जगदीश अच्छा समझा सकते हैं। कोई तो जरा भी नहीं समझा सकते हैं। है तो बहुत ही सहज। तुम आत्मा हो। शरीर का बाप तुमको नर्कवासी बनाते हैं। और आत्माओं का बाप स्वर्ग वासी बनाते हैं। अभी किसका बच्चा बनना चाहते हो। नया तो समझेंगे नहीं। समझदार कहेंगे वाह! कई तो समझलेते स्वर्ग नर्क यहां ही है। बाकी यह सभी कल्पना है। बाप समझाते हैं वह है मनुष्य मत। मनुष्य मत सदैव गिराते ही रहेंगे। जल्दी2 गिरावेंगे। देवताओं की मत थोड़ा2 गिरावेंगे। त्रेता तक दो कला कम हो जाती है। शिव बाबा तो एकदम चढ़ा देते हैं। सभी की है बढ़ती कला। सब जब सुखधाम शान्तिधाम चले जावेंगे। बस। बाप का काम ही है चढ़ती कला में ले जाना। बाप एक ही है जो आकर सारी दुनिया की चढ़ती कला करते हैं। वहां कोई छी छी चीज होगी ही नहीं। सुन्दर ते सुन्दर होता ही है स्वर्ग। मनुष्य भी सुन्दर ते सुन्दर जेवर भी सुन्दर सभी सुन्दर मकान बगीचे आदि सभी सुन्दर ही होते हैं। इसलिये इनको बहिस्त कहते हैं। यह है वन्डर ते वन्डरफुल अच्छी ते अच्छी चीज स्वर्ग। सीढ़ी पर भी समझाया है ना कैसे जरा2 कला कम होती जाती है। क्योंकि सीढ़ी उतरनी होती है। सीढ़ी उतरना और चढ़ना इस पर एक कहानी है। हमको भी आलराउन्ड पार्ट मिला हुआ है उतरने और चढ़ने का। सीढ़ी ही 84 की है पूरी। यह बेहद की सीढ़ी है। 5000 वर्ष में 84 जन्म। फिर एक जन्म में बाप चढ़ती कला में ले जाते हैं। जल्दी ही ज्ञान उठा कर पहले नम्बर में चले जावेंगे। ड्रामा में जब जिसको उतरना है उस समय ही उतरते हैं। यह बना बनाया खेल है। अनेक वार तुमने पार्ट बजाया है। बाप सभी की चढ़ती कला करते हैं। जो श्रीमत —

9-10-68 मुरली 9-10-68 NC

पुर चलते हैं। वह श्रेष्ट बनते हैं। ईश्वरीयमत से चढ़ते हो। सतयुग तो उच्च है सूर्यवंशी। फिर त्रेता में है चन्द्रवंशी। दो ब्रह्म मार्कस से हराते हैं। इस खेल को अच्छी रीत समझने से पुरुषार्थ भी ऐसा चलता है। तीखा चलेगा तो कल्प कल्प ऐसा ही होगा। ठंढा पुरुषार्थ तो पद भी कम। बहुत तीखे चलने वाले उच्च पद पावेंगे। कल्प कल्प क्या पद पाया था वह अभी की चलन से मालूम पड़ जाता है। इसलिये पुरुषार्थ जरूर करना है। जिससे पता पड़े ड्रामा के प्लैन अनुसार इनका पुरुषार्थ बड़ा ही अच्छा है। इनका पुरुषार्थ बिल्कुल ही ठंढा है। उत्तम मध्यम कनिष्ट तो होते हैं ना। सारा मदार पढ़ाई पर है। तुम देखते रहेंगे उत्तम पुरुषार्थी सर्विस में ही लगे रहेंगे। सर्विस बिगर आराम नहीं आवेगा। समझते हैं जितना बहुतों की सर्विस करेंगे कल्याण करेंगे उच्चपद पावेंगे। बाप दादा दोनों सभी साक्षी होकर हर एक को देखते हैं। कल्प 2 ऐसे हीरफ्तार से पद पाया था। कोई की रफ्तार उत्तम, कोई की मध्यम, कोई की कनिष्ट। कोई कहते हैं मैं समझता हूं मुख से बोल नहीं सकता हूं। बाप कहेंगे। यह तो कनिष्ट है। गाड़ियों मे भी मेल, एक्सप्रेस, जनता आदि होते हैं ना। जितना जो बाप को याद करते हैं। सुनकर औरों को सुनाते रहते हैं। कहेंगे यह बहुतों का कल्याण करते हैं। पुरुषार्थ से ही प्रारब्ध अच्छी मिलती है। टीचर स्टुडन्ट के पुरुषार्थ को नहीं समझ सकते होंगे। दो तीन को ध्यान में रखेंगे। क्योंकि गैलप कर लेते हैं ना। तुम हो बेहद की बुधि वाले। जानते हो यह बेहद का चक्र कैसे फिरता है। तुम ही राजा बनते हो। इसमें शोक बहुत चाहिए। बिल्कुल ही सहज है। दो बाप का परिचय देना है। वह बेहद का बाप है यह हद का। बेहद के बाप ही नई सृष्टि रचते हैं। तुम ब्राह्मणों को श्रीमत मिलती है नई सृष्टि रचने की। तुमको मत देने वाला है भगवान। भगवान जरूर ब्राह्मणों को ही मत देते हैं न देवताओं को, न शूद्रों को। खुद स्टुडन्ट भी समझते हैं हम कमजोर हैं। इतना पद नहीं पा सकेंगे। बाबा झट बता सकते हैं। तुम इसमें कहां तक पुरुषार्थी हो। बेहद का टीचर है ना। बेहद के बच्चे सभी सामने आते हैं। सभी की अवस्था को बाप जानते हैं। सभी को बता सकते हैं। ब्राह्मणियां भी बतावेंगी। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रिक्लास 10-10-68 :-

******* ********** तुम समझदार हो तो समझ सकते हो। जो ब्लाईन्ड हैं वह कुछ भी नहीं समझेंगे। चित्र तो बहुत ही देखे हैं शिव की, राधे कृष्ण की, ल०ना० के देखे हैं। बाकी तुम फर्क सिध कर बताते हो गीता कृष्ण ने नहीं शिव ने सुनाई है। शिव को रथ की दरकार है। कृष्ण को रथ की दरकार नहीं। कलियुग सतयुग भी कहते हैं परन्तु उनका हिसाब किताब उन्हों के पास है नहीं। रावण को तो समझ भी नहीं सकते हैं। वह क्या चीज है। जलाते हैं परन्तु यह समझते नहीं हैं 5विकार उन में है 5विकार उस में है। शिव बाबा को भी नहीं समझते हैं। तो रचना के आदि मध्य अन्त को भी नहीं जानते हैं। कृष्ण को श्याम सुन्दर क्यों कहते हैं यह नहीं समझते हैं। कृष्ण नई आत्मा है तो सुन्दर है। फिर सांवरा कृष्ण को कहेंगे नहीं कहेंगे। कृष्ण की आत्मा बहुत जन्मों के अन्त में जब आते हैं तो उनको गांव का छोड़ा कहते हैं। आत्मा वही है बाकी शरीर भिन्न2 हैं। आत्मा जड़ भी है चैतन्य भी है। ज्ञानवान भी है अज्ञानी भी है। जड़ कहते हैं झाड़ आदि, घोड़े गदहे। इनको चैतन्य के रूप में ले आवेंगे परन्तु जानवर है। झाड़ को कुछ भी लगाओ फील नहीं होगा। जनावर को फील होगा। जानवर से मनुष्य की बुधि अच्छी है। परन्तु इस समय में मनुष्यों से जानवरों की बुधि अच्छी है। घोड़ों की पालना कितनी अच्छी होती है। 4-5 सौ खा जाते हैं। बाकी हां मनुष्य की इतनी बुधि है जो विश्व का मालिक भी बन सकते हैं तो विश्व का गुलाम भी बन सकते हैं। इस समय माया के गुलाम हैं। प्रकृति के गुलाम हैं। फिर वहां यह सभी गुलाम बन जाते हैं। प्रकृति दासी रहती है। बाप हिसाब बताते हैं पूरा, मैं बहुत जन्मों के अन्त वाले में ही प्रवेश करता हूं जिसको ही फिर पहले नम्बर में जाना है। सेकण्ड व सेकण्ड जो एक्ट होता है सो तो बिल्कुल एक्युरेट। फिर कल्प बाद यही होगा। फायदा या घाटा जो हर जन्म में पड़ता है सो फिर भी पड़ता रहेगा। पार्ट बजाते रहेंगे। इस समय बच्चों को समझ है यह ड्रामा है। नाटक में एक्टर्स

10-10-68

चेंज होते हैं। यह ड्रामा शुट किया हुआ है। मनुष्य पार्ट बजाते रहते हैं। इसमें तो चेंज हो न सके। शुट जो हुआ वही फिर दिखाई पड़ेगा। इनको वेहद का ड्रामा कहते हैं। इनका हिन्दी अक्षर है कोई है नहीं। मनुष्यों को पता भी नहीं है तो अक्षर भी नहीं रखा है। हद के ड्रामा देखते रहते हैं। परन्तु इनका हिन्दी अक्षर है नहीं। यह सृष्टि वेहद का ड्रामा है यह किसको भी पता नहीं है सिवाय तुम्हारे। सृष्टि का चक्र अनादि फिरता रहता है। जिसको कहा जाता है बनी बनाई बन रही ... ड्रामा को सृष्टि चक्र कहा जाता है। बाप ही बतलाते हैं। मनुष्य न रचयिता बाप को जानते हैं न रचना के सृष्टि चक्र को ही जानते हैं। रचयिता अक्षरभी कायदे सिरे नहीं है। रचयिता है तो रचना कब रची? तुम बच्चे जानते हो इसका रचयिता भी नहीं है। रचना के आदि मध्य अन्त को समझाने वाला है। अनादि जो रचना बनी हुई है उनको वह जान सकते हैं। जो बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं। वास्तव में इनको रचयिता नहीं कह सकते। रचना परमपरा से है। रचना को कहेंगे सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। बड़ा ही गुह्य ज्ञान है। परम पिता परमात्मा को वास्तव में सृष्टि का रचयिता नहीं कह सकते हैं। अनादि रची हुई है। नई सृष्टि का रचयिता कह सकते हैं। फिर उनको पुराना रावण बनाते हैं यह कह सकते हैं। रचना के आदि मध्य अन्त को समझाने वाला एक ही बाप है। रचना अनादि है-उनकी आदि मध्य अन्त को समझाने वाला बाप है। बाप जानते हैं रचना के आदि मध्य अन्त को। वह बाप जिसको परमपिता परमात्मा कहते हैं वह चैतन्य है, जानीजाननहार है। अर्थात इस खेल को जानते हैं। उसमें नालेज है यह चक्र कैसे फिरता है। ऐसे नहीं कहेंगे उसने रचना रची है। सारी रचना परम्परा से चली आती है। उनको क्रियेटर कहना भी रांग हो जाता। वह रचना के आदि मध्य अन्त का राज बताते हैं। इसने बनाया नहीं है बैठ कर। तो क्रियेटर रचयिता अक्षर भी रांग है। यह अक्षर भी भक्ति मार्ग के हैं। ज्ञान मार्ग की बात बाप ही आकर समझाते हैं। अभी तुम भक्त नहीं हो। भक्ति नहीं करते हो क्योंकि बाप ने ज्ञान दिया है। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है। सर्वशक्तिवान नाम से समझते हैं उनमें सभी शक्ति है। चक्र का अर्थ कितना उल्टा उठाया है। कृष्णको चक्र दिया है सीस काटने लिये। कितनी हिंसा की कहानी है। तुम बच्चे पढ़ाई के संस्कार ले जावेंगे। जीन अनुसार तुम आकर फिर पार्ट बजावेंगे। और भी आगे समझते रहेंगे साक्षात्कार करते रहेंगे। इस जन्म की बातें जीवन कहानी तुम जान सकते हो। छोटेपन से अपनी जीवनकहानी को जान सकते हो। भल खुद को कुछ याद न होगा। उनको फिर बड़े बैठ सुनाते हैं। जैसे नेहरु के छोटेपन से दिखलाते हैं ना। बाप बच्चे के जीवनकहानी को जानते हैं। जीवनकहानीलिखी नहीं जातीहै। सुन2कर फिर बैठ लिखते हैं। तो अभी तुम बच्चे सृष्टि के मालिक बनने पुरुषार्थ कर रहे हो। वह सभी वेहद के आत्माओं का बाप है। तुम्हारी राजधानी की स्थापना होती है योगबल से। योगबल से पाप भस्म हो जाते हैं। सन्यासी कहते आत्मा निर्लेप है। मास शराब आदि सभी खिलावेंगे। कहते हैं इन से आत्मा का कनेक्शन नहीं। बाप तुम बच्चों राईट बात सुनाते हैं। वह कितना झूठ बोलते हैं। इनको कहा जाता है अतिधर्म की ग्लानी। बाप जो सभी की सदगति करते हैं उनकी बैठ ग्लानी करते हैं। कितने अवतार दिखाते हैं। तुम बच्चे अभी समझते होकैसे नीचे गिरते हैं। तुम मनुष्यों को समझाते हो। सुनते भी हैं बरोबर भारत विश्व का मालिक था। आदि सनातन देवी देवताधर्मथा। अभी क्या हो गया है। कुछ भी नहीं समझते। कहते हैं भारत ही सोने की चिड़ियां थी। बाप समझाते हैं तुम कितने बेसमझ थे। अभी वेहद की समझ मिलती है। वेहद सृष्टि का चक्र समझाया है। यह ज्ञान है ही अमरलोक के लिये। यह है मृत्युलोक। वहां अमरलोक में काल खाता नहीं। पूरे समय पर आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। यह है ईश्वरीय युनिवर्सिटी। तुम पढ़ते हो। तुम्हारे लिये ही नई दुनिया चाहिए। इसलिये सबको मुक्तिधाम भेज देते हैं। देवतायें होते हैं नई दुनिया में। यह बातें बाप बैठसमझाते हैं और कल्प2 समझाते हैं। तुम फिर भूल जाते हो। यह पढ़ाई बाप ही पढ़ाते हैं। मनुष्य पढ़ा न सके। सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी बुद्धि में होनी चाहिए। कैसे रिपीटहोती सो भी बुद्धि में रहना चाहिए। जो किसको भी समझा सकें। अच्छा रूहानी बच्चों रूहानी बाप का नमस्ते गुडनाईट और नमस्ते